बाबा श्रीचन्द्र जी की जीवन और शिक्षा यात्रा : एक झलक

बाबा श्रीचन्द्र लुप्तप्राय उदासीन सम्प्रदाय के पुनः प्रवर्तक आचार्य हैं। उदासीन गुरू परंपरा में उनका 165 वां स्थान है। बाबा श्रीचन्द्र जी का जन्म भाद्र शुक्ल नवमी को वि.सं. 1551 सन 1494 ई. में श्री गुरुनानक देव जी के घर तलवंडी गांव में (वर्तमान में ननकाना साहिब, पाकिस्तान) नामक स्थान पर हुआ। आप की माता जी का नाम सुलक्षणी अर्थात शुभ लक्षणों वाली था। आप बचपन से ही अलौकिक तथा रूहानी प्रकृति वाले थे। आप बालजती, सती, महान तपस्वी, ब्रह्मज्ञानी तथा उदासी मत के संस्थापक थे। श्री के.एम. मुंशी अपनी पुस्तक 'द लाईफ ऑफ बाबा श्रीचन्द्र' में लिखते हैं कि जन्म के समय ही आप के अवतरण को बड़ा महान प्रगट किया गया और बुद्धिमान लोगों ने समझा कि भगवान शंकर स्वयं आए हैं।

बहुत छोटी आयु से ही आप ने अपने पिता गुरुनानक देव जी से अक्षर बोध तथा गिनती आदि सीखी और ध्यान लगा कर समाधि लगाने का अभ्यास भी करने लगे। जब आप केवल सात वर्ष के ही थे तो गुरुनानक देव जी उदासी (यात्राओं) पर चले गए। गुरु जी ने बाबा श्रीचन्द्र जी को इक औंकार सतिनाम श्री वाहिगुरु जी का मूल मंत्र दिया व इस को जपने का आदेश दिया। बाबा जी स्व-चरित मात्रा में इस बात को स्पष्ट करते हैं।

गुरु अविनाशी खेल रचाया अगम निगम का पंथ बताया

जहां सिख इतिहासकार 'अविनाशी' शब्द को अकाल पुरूख परमात्मा के लिए प्रयोग हुआ समझते हैं वहीं पर उदासी आचार्य इसे गुरु अविनाशी मुनि नाम के एक संत के लिए प्रयोग हुआ समझते हैं। वास्तव में बाबा श्रीचन्द्र जी ने गुरुनानक देव जी को अपने पिता और गुरु के साक्षात ईश्वर के रूप में देखा। आपने जिस आरते (आरती) का उच्चारण किया उस में गुरुनानक देव जी का दुनिया का शहंशाह कहा है। 'आरता कीजै नानक शाह पातशाह का हर हर दीन दुनिया के "शहंशाह" का। बाबा जी ने वेदों की उच्च शिक्षा श्रीनगर में हासिल की और वेदाचार्य कहलाए।

बाबा जी ने उच्च आचरण, आदर्श जीवन, संयम, मर्यादा तथा ईश्वर में अथाह विश्वास पर काफी बल दिया, लेकिन उनका प्रोग्राम एक विशेष कार्य के लिए भी था। आपने समस्त भारत का दौरा किया। उत्तर से दक्षिण तक तथा राजस्थान में उदयपुर व आबू तक आप पहुंचे। इन यात्राओं के दौरान आप भारत की पिछड़ी तथा गिरी हुई हालत से परिचित हुऐ। मुगलों के आक्रमण,बढ़ती हुई कट्टरता, भारतीयों के गिरे हुए मनोबल तथा डोलती मानसिकता में नए प्राण फूंकने की आवश्यकता थी,जिसे आपने बखूबी समझा। उत्तर भारत विदेशी आक्रमणों का प्रमुख केन्द्र था। यहां खुले आम हिन्दुओं को पूजा अर्चना से वर्जित

किया जाता था। बाबा जी ने उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत में अपने चार बड़े केन्द्र स्थापित किए, जैसे कि वहां ऐसे चार बड़े थम्भे गाड़ दिए, जिनके अंतर्गत भारतीय संस्कृति अपने आप को सुरक्षित महसूस कर सकती थी। श्रीनगर, सिंघ बारठ, पेशावर तथा काबुल बड़े केन्द्र बन गए।

आप की शरण में अनेकों राजा महाराजा आए जिनमें बादशाह जहांगीर भी था। लेकिन सोई हुई रूहों को जगाने के लिए, टूटे हुए धागों को जोड़ने के लिए आप जी का महाराणा प्रताप तथा समरथ रामदास जी को उपदेश अपना विशेष स्थान रखता है। बाबा जी की भक्ति व राष्ट्रप्रेम ने मुगल जुल्म व अत्याचार के विरूद्ध राजपूती शान को जगाया और उन्हें संगठित कर लड़ने के लिए उत्साहित किया।

समरथ रामदास जी शिवा जी के गुरु थे। उन्होंने मराठों के मोर्चे को प्रेरित किया। शिवा जी शक्ति के श्रोत बन गए। इससे बाबा जी की सूक्ष्म दृष्टि का पता चलता है। भारतीय इतिहास सदैव बाबा श्री चन्द्र जी का आभारी रहेगा।

आपने हिन्दुओं तथा मुसलमानों में पड़ी दरार को समाप्त करने का भी प्रयत्न किया। जब मौलवी नूरउद्दीन ने आप से पूछा कि ईश्वर राम व रहीम दोनों एक ही कैसे हो सकते हैं, तो उत्तर मिला वह सब जगह रमा हुआ है इसलिए राम है। वह करुणामयी है, दया करने वाला है इसलिए रहीम है।

जब आप से यह पूछा गया कि हिंदू या मुस्लमान में कौन श्रेष्ठ है, तो आपने कहा जो जीवों को प्यार करता है वह श्रेष्ठ है। आप अकारण ही जीव हत्या का विरोध करते हैं।

बाबा जी का मिशन एक तरह से जन आन्दोलन बन गया। आप जहां भी गए गांव के गांव व शहर के शहर आप के अनुयायी बन गए। सिंघ थटटा में मुहम्मद खान बाकि ने हिन्दुओं के पूजा पाठ पर कई तरह के प्रतिबंध लगोय हुए थे। बाबा जी की ऐसी करामात हुई कि जब उन्होंने शहर में प्रवेश किया तो वह पागल होकर मर गया और उस का बेटा मिर्जा जान बेग ना केवल श्रद्धालू बन गया बल्कि उसने हिन्दुओं को पूजा पाठ की छूट भी दे दी।

जब बाबा श्रीचन्द्र जी श्रीनगर कश्मीर पहुँचे तो शेर अफगान खान आप के नग्न शरीर व माथे के चमकते नूर को देखकर आप का मुरीद हो गया। बाबा जी ने उसे समझाया कि यह दुनिया ईश्वर का बाग है, जहाँ रंग बिरंगे, नीले, पीले, कड़वे, मीठे फूल तथा फल है। अर्थात भिन्न-भिन्न विचारों, महजबों तथा ख्यालों को लोग इस खुदाई बाग के बेल बूटे हैं। यहीं पर बाबा जी ने अपने धूने से जलती चिनार को हरा कर दिया था और आज भी यह स्थान मौजूद है।

बाबा जी के विचारों में समाजवाद की झलक मिलती है। आपके अनुसार सृष्टी की उत्पति के समय धरती, आकाश, पवन, पानी, सर्दी-गर्मी, चांद, रोशनी तथा वनस्पतियों पर सब का अधिकार है और वह ईश्वर की अनमोल देन है। पशू, पक्षी जल के जीव प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए केवल आवश्यकतानुसार उसका उपभोग करते हैं। जबकि असंतोषी व भौतिकवादी मनुष्य ने समाज में ऊंच-नीच, अमीर गरीब आदि का भेदभाव पैदा कर दिया।

<u>गुरुओं के साथ सम्बन्ध</u>

सिख गुरुओं के साथ बाबा जी के सम्बन्ध बड़े मधुर, प्यारे, आदर श्रद्धा तथा सम्मान वाले थे। कुछ समय से यह भ्रम पैदा करने की कोशिश की गई कि गुरुनानक साहिब जी का बेटा होने के अतिरिक्त उनका सिखों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था। यह अंग्रेजों की फूट डालों और राज करो या कुछ स्वार्थी लोगों की नीति का थी।

जबकि सिख इतिहास प्रत्येक स्थान पर इस बात की गवाही देता है कि बाबा जी के सम्बन्ध जीवन प्रयंत गुरुघर के साथ रहे और बड़े अच्छे रहे। गुरु अंगद देव जी गुरुनानक देव जी के छोटे बेटे लक्ष्मी चन्द्र के विवाह में शामिल हुए। गुरु अमरदास जी ने तो अपने बेटे मोहन जी ही भेटा कर दिये। गुरुरामदास जी न केवल बाबा श्रीचन्द्र के दर्शन करने के लिए आये बल्कि बाबा जी के सूझाव पर उन्होंने रामदासपुर तथा रामदास सर का नाम बदल कर अमृतसर तथा हरिमंदिर रखा। गुरुप्रताप सूरज ग्रंथ तथा तवारीख गुरु खालसा बाबा जी की अमृतसर यात्रा का वर्णन करते हैं जब उनको आदर पूर्वक गुरुओं ने ऊँचे स्थानपर बैठाया था।

<u>उच्च स्थान श्रीचन्द्र बिठाये आप निम कर तरै-तकाये</u>

गुरु रामदास जी की सहजता व गंभीरता को देखते हुए बाबाजी जो स्वयं जटा जूट व पूर्ण केशों से सुसज्जित थे। गुरु जी से कहा इतनी दाढ़ी क्यों बढ़ाई है? नम्रता पूर्वक गुरु जी ने कहा आप जैसे महान संतों के चरणों को झाड़ने के लिए।अपने बुजूर्ग के प्रति इतना प्यार व सम्मान अतुलनीय है। गुरु राम दास जी ने बाबा जी को पाँच सौ रूपये तथा एक घोड़ी की भेट की जो बाद में भी गुरु घर से लगातार बाबा जी को जाती रही। गुरु अर्जन देव जी स्वयं बारठ गये और सुखमनी साहिब की 16 अष्टपदीयाँ सुनाई। बाबा जी की प्रेरणा से 24 अष्टपदीयाँ पूरी की तथा गुरु गंथ साहिब जी की संपादना के लिये और पोथीयाँ प्राप्त की। बाबा जी के हुक्म व कृपा से बारठ से जल की एक गागर तरन तारन के सरोवर में डाली ताकि उसका जल कभी सूखे नहीं।

जब गुरु हरगोविन्द साहिब अपने साहिबजादों के साथ बाबा जी के दर्शन करने गये तो श्रीचन्द जी ने टिका गुरदित्ता जी में अपने पिता वाला नूर देखा। बाबा जी ने उन्हें मांग लिया। गुरु जी ने बड़ी श्रद्धा से बड़ा पुत्र बाबा जी को भेंट किया। बाबा जी ने अपना उदासी भेष उन्हें सौंप कर अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया तथा बाबा गुरदित्ता दीन दुनिया का टिका कहा।

बाबा जी अगर चाहते तो गद्दी अपने घर भी रख सकते थे। अपने किसी अन्य भगत को दे सकते थे, पर आपने यहां दूरअंदेशी और नीति निपुणता दिखाई। भेदभाव तथा बंटवारे के सभी भेद मिटा कर आपने यह सिद्ध कर दिया कि उदासी मत गृहस्थल के विरूद्ध नहीं है। पर केवल गृहस्थी ही मनुष्य के जीवन का असली निशाना नहीं है।

इस तरह सिखों व उदासी साधुओं ने 18वीं शताब्दी में जब पंजाब में पत्ता पत्ता सिखों का वैरी हो गया था, जब सिखों का घर घोड़े की काठी और जंगलों में था, उस समय सिख एतिहासिक स्थानों व गुरूओं की महान यादों को उदासी साधुओं ने बचाया। गुरूमुखी भाषा, गुरुवाणी, सिख साहित्य तथा आदर्शों का प्रचार दूरस्थ स्थानों पर उदासी साधुओं ने किया।

आज समय की मांग है कि हम अपनी संगदिली, जाति-पाति सम्प्रदाय आदि के भेद मिटा कर गुरुओं व महापुरुषों के वचनों पर चल कौम, समाज व देश के निर्माण के लिए एक हो जायें।

बिष्णु नारायण चौबे

सचिव

उदासीन गृहस्थ समाज उत्थान परिषद

निवास-ग्राम पो० खुसरूपुर जिला-पटना (बिहार)

पिन - 803202 मो०-8789000173, 8084222381